6

कुलुस्सियों के लिए पौलुस के परिश्रम

कुलुस्सियों 1:24-29

मसीह के लिए पौलुस की निजी सेवकाई विरोध और सताव के बीच उससे सेवा करने को कहती। उसका संदेश था कि परमेश्वर के भेद को प्रकट कर दिया गया है: अब अन्यजाति लोगों को मसीह के उन में होने के द्वारा महिमा की आशा हो सकती थी। पौलुस के परिश्रमों का उद्देश्य था कि हर व्यक्ति उसके डील डौल तक पहुंच जाए।

उनका आनन्द उसके लिए दुख सहना (1:24)

[24]अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिए उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिए, अर्थात कलीसिया के लिए, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं।

''अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं'' (1:24)

पौलुस ने लिखा, **अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं।** यीशु ने पौलुस को दिखाया था कि उसकी गवाही देते हुए उसे दुख उठाना पड़ेगा (प्रेरितों 9:16)। दुख आनन्द देने वाला नहीं है। बच्चे के जन्म के समय माता की पीड़ा बहुत गहरी होती है, परन्तु उसे यह जानकर आनन्द हो सकता है कि उसका बच्चा संसार में आने वाला है (यूहन्ना 16:21)। पौलुस दुखों से आनन्दित नहीं होता था परन्तु उन लाभों से आनन्दित होता था जो कुलुस्सियों को मिल सकते थे। यह कहते हुए कि यदि उनके लिए उसे बलिदान भी होना पड़े तो उसे अनन्द होगा, फिलिप्पियों में उसने ऐसे ही विचार व्यक्त किए (फिलिप्पियों 2:17)। दुख के बीच आनन्द करने की बात की ही यीशु अपने चेलों से उम्मीद रखता है (मत्ती 5:10-12; देखें प्रेरितों 5:41; 16:25; याकूब 1:2)। क्रूस पर अपनी मृत्यु के प्रति यीशु का व्यवहार यही था (इब्रानियों 12:2)।

पौलुस कुलुस्सियों की खातिर दुख कैसे सह रहा था? उसने बताया नहीं। सताव की खबरें कि पौलुस दुख सह रहा था उन्हें मिली होंगी। उसके दुख उठाने ने उसे मसीह के लिए एक अगुवे के रूप में साबित कर दिया होगा। उसके साथी हर बार उसके साथ सताए नहीं गए थे। शायद इसलिए क्योंकि वे सुसमाचार सुनाने में उसके जैसे निडर नहीं थे (देखें प्रेरितों 14:19, 20)। प्रेरित और भाइयों में अगुवे के रूप में उसके दुख सह लेने ने उसे प्रेरिताई का अधिकार देकर मसीह के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में पहचान दिला दी। इसके अलावा उसके नमूने से उन्हें कड़े विरोध में भी यीशु के वफ़ादार बने रहने का प्रोत्साहन मिला होगा।

विश्वास में अगुवे के रूप में कइयों की नज़र पौलुस पर थीं और उसे इस बात का ध्यान

रहा होगा। दृढ़ और स्थिर रहकर उसका उन सब के लिए जिन्हें पता चला कि वह सुसमाचार के लिए उस पर क्या बीत रही है एक नमूना दे दिया। यदि परीक्षाओं में वह हार मान लेता तो बहुतों को निराशा मिलनी थी और उन्होंने विश्वास से हट जाना था। उसके अच्छे उदाहरण से दूसरों को अति कठिन परिस्थितियों में मसीह से जुड़े रहने का साहस और सामर्थ दिया। विलियम हैंड्रिक्सन ने कहा है, ''और क्या कोई कठिनाइयों के बीच उसका बने रहने कुलुस्सियों को और वास्तव में हर जगह विश्वासियों को अपने विश्वास में दृढ़ नहीं करेगा?''[1]

लगातार खतरे के बीच वफ़ादार हरने का पौलुस के निश्चय ने दूसरों से कह दिया कि वे भी ऐसा ही करें और वे ऐसा कर सकते हैं। उसने इस बात को समझा कि चाहे वह जेल की ज़ंजीरों में था पर फिर भी उसके दृढ़ रहने से फिलिप्पियों को लाभ मिला था। उसने लिखा कि उसकी स्थिति ''सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है'' और ... यह कि ''प्रभु में जो भाई हैं, उन में से अधिकांश मेरे कैद होने के कारण, हियाव बान्ध कर, परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने का और भी हियाव करते हैं'' (फिलिप्पियों 1:12, 14)।

''और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिए,
अर्थात पूरी किए देता हूं।'' (1:24)

अनुवाद शब्द ''पूरी किए देता'' (*antanaplēroō*) नये नियम में केवल यहीं मिलता है। यह लिखते हुए कि वह **घटी** पूरी किए देता था, पौलुस यह संकेत नहीं दे रहा था कि सारे संसार में सुसमाचार फैलाने में यीशु के काम को केवल वही पूरा कर रहा था। उसके कहने का अर्थ था कि अपने प्रयास में वह अपना योगदान दे रहा था।

क्लेशों (*thlipseis*) का ''दुखों'' (*pathēmata*) से अलग अर्थ है जो पहले इस आयत में आया था। ''दुखों'' के लिए शब्द आम तौर पर दुर्व्यवहार के द्वारा मिली पीड़ा का संकेत देता है और यह मसीह के क्रूस की बात हो सकती है (2 कुरिन्थियों 1:5; इब्रानियों 2:9, 10)। ''क्लेशों'' के लिए शब्द के लिए एच. सी. माउल ने लिखा है,

> [नये नियम में] कहीं भी और हमारे धन्य प्रभु के अनुभवों का इस्तेमाल नहीं किया गया है, चाहे क्रूसारोहरण के भेजन में यह मिलता है [भजन संहिता 22 (LXX में 21)] इसका आम हवाला *मृत्यु* की पीड़ाओं के लिए नहीं बल्कि सताव की कठिनाइयों और यन्त्रणा के लिए और आम तौर पर [बोझिल] *जीवन* की परिक्षाओं के लिए है।[2]

अगली आयतों में पौलुस ने यह समझाते हुए कि ''क्लेशों'' से उसका क्या अभिप्राय था अपनी सेवकाई की चर्चा की। अपने काम के परिणाम के रूप में उसने कठिनाइयां और दुख सहे (2 कुरिन्थियों 1:4-8; 2:4; 4:8, 17; 7:4, 5; फिलिप्पियों 4:14; 1 थिस्सलुनीकियों 3:4, 7)। 2 कुरिन्थियों 11:23-30 में उसने कुछ विस्तार से इनका वर्णन किया। उसने उन क्लेशों की बात भी लिखी जो मसीही लोग सहते हैं (2 कुरिन्थियों 1:4; 8:2, 13; 2 थिस्सलुनीकियों 1:4, 6, 7)।

मसीह के ''क्लेशों'' (बहुवचन) की बात करते हुए पौलुस क्रूस की पीड़ा से कहीं अधिक कहना चाहता था। पौलुस का दुख सहना क्रूस पर यीशु के दुख सहने और उद्देश्य से अलग था।

पौलुस के कहने का अर्थ अपनी निजी सेवकाई के दौरान अपमान और विरोध के बीच इन मनुष्यों के रूप में यीशु द्वारा सहे जाने वाले बोझ, परिश्रम, लज्जा और परिश्रमों की बात थी (इब्रानियों 12:3, 4)। ऐसी परिक्षाओं और विरोध के सहने की उम्मीद उन लोगों द्वारा की जा सकती है जो सुसमाचार को फैलाते हैं। यीशु के लिए अपनी सेवा के कारण पौलुस ने लिखा कि ''मसीह के दुख हम को अधिक होते हैं'' (2 कुरिन्थियों 1:5)। उसने कहा कि उसने ''यीशु की मृत्यु को अपनी देह में'' (2 कुरिन्थियों 4:10) और ''यीशु के दागों को'' रखा था (गलातियों 6:17)। उसका लक्ष्य ''उसके साथ दुखों में सहभागी होने'' (फिलिप्पियों 3:10) का था।

यीशु के क्लेश उन में जो वचन का प्रचार करते हैं दुखों का केवल आरम्भ थे। स्वर्ग में उसके ऊपर उठाए जाने के बाद, उसके क्लेश उसके चेलों के साथ बने रहने थे। यदि सुसमाचार के प्रचार के लिए वह पृथ्वी पर रहता तो उसे और दुख और विरोध का सामना करना पड़ना था। इसके बजाय उसके काम को जारी रखने और जो उसने आरम्भ किया था, उसे पूरा करने के लिए उसके चेलों का दुर्व्यवहार सहना था। जब तक सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा विरोध जारी रहेगा।

> इस प्रकार से कलीसिया के लिए जो मसीह की देह है पौलुस वह पूरा करता है जिसकी कमी अभी भी हो सकती है। ऐसा वह केवल अपने वचनों से ही नहीं बल्कि अपने शरीर में यानी अपने वास्तविक, शारीरिक अस्तित्व में करता है। इसका अर्थ केवल ''मसीह के क्लेशों'' में से गुज़रना, मसीह की खातिर कठिनाइयां सहना हो सकता है; और यह कठिनाइयां ही प्रचार को ऐसे प्रभावशाली ढंग से बनाती है कि कुलुस्से के लोगों और संसार भर के अन्य समाजों के बीच विश्वास की इसकी परिपूर्णता मिलती है।[3]

यह कहते हुए कि वह उसे पूरा कर रहा है, ''मसीह के क्लेशों की घटी'' है पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि यीशु की मृत्यु एक अधूरा बलिदान था जिसे पूरा करने के लिए और दुख सहना आवश्यक था। उसने समझाया कि यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा मेल सम्भव बना दिया है (आयतें 20-22) और मसीही लोग उस में सम्पूर्ण हैं (2:10)। यीशु के एक बलिदान ने उसे सिद्ध, ''सम्पूर्ण'' (इब्रानियों 5:8, 9) और पर्याप्त बना दिया है। वह सारे संसार के सब पापियों को ढांपने के योग्य है (1 यूहन्ना 2:2)। एक बलिदान से (इब्रानियों 7:27; 9:26-28; 10:10-14) उसने उस सब को पूरा कर दिया जो मनुष्यजाति के उद्धार के लिए आवश्यक था।

''उस की देह के लिए, अर्थात कलीसिया के लिए, अपने शरीर में'' (1:24)

अपने दुखों के कारण पौलुस कह पाया, ''**उस की देह के लिए, अर्थात कलीसिया के लिए, अपने शरीर में।**'' कुलुस्सियों के लिए उसका दुख सहना केवल उन्हीं के लिए नहीं था बल्कि पूरी देह के लिए था। अन्य लोग मसीह के प्रति उसके समर्पण और मसीह की देह के लिए उसकी सेवा के कारण उसे परेशानियां दे रहे थे, न कि उसकी जीवन-शैली के कारण।

जब उसने ''अपने शरीर'' में (*en tē sarki mou*) कहा तो पौलुस के कहने का अर्थ वह शारीरिक देह थी जिसमें उसका भीतरी मनुष्य था (2 कुरिन्थियों 4:16; 5:1, 4)। उसने अपने

शरीर को स्वाभाविक रूप में पापी नहीं माना, जैसे ज्ञानवादियों ने बाद में शिक्षा दी।

मसीही बनने से पहले पौलुस दूसरों के हाथों दुर्व्यवहार किए जाने के बिना था। परन्तु यीशु का चेला बनने पर उसने लगभग लगातार सताव झेला। उसका दुख सहना उसके अपने पापों के कारण नहीं था। उसकी कठिनाइयों ने चाहे उसे परमेश्वर की सहायता में और पूरी तरह से भरोसा रखना सिखाया पर वे यीशु की देह अर्थात कलीसिया के लिए भी लाभदायक सिद्ध हुए। वह सुसमाचार को इस तरह से फैला सका जैसे और कोई नहीं फैला सका। जिससे कलीसिया पूरे रोमी साम्राज्य के अधिकतर भागों में फैल गई। उसके अपने सारे प्रयासों के कारण और उन सभी कठिनाइयों के बावजूद जो उसने सहीं, जहां भी वह गया वहां कलीसियाएं बनीं और बढ़ीं। मसीह की देह की ओर से उसका काम संसार भर में मण्डलियों को मज़बूत करना और नई मण्डलियां बनाना था। इसके अलावा उसने कलीसियाओं की देखभाल के लिए भी बहुत दुख सहा (2 कुरिन्थियों 11:28)।

जो सताव उसने सहा वह कई बार इतना कठोर होता था कि वह आत्मा में दुखी होता था। वह यहां तक दुखी होता था कि वह अपने जीवन से हाथ धो बैठा (2 कुरिन्थियों 1:8, 9; 6:4, 5; 11:23-27)। मसीही लोगों को उन भीतरी संघर्षों और शारीरिक पीड़ा का कभी पता नहीं चल पाएगा जो विरोध और क्रूर व्यवहार में वचन का प्रचार करते समय पौलुस ने सहा था। यीशु ने उसे चेतावनी दी कि उसे क्या सहना होगा और उसे भयभीत न होने के लिए समझाया था (प्रेरितों 9:16; 18:9, 10; 1 कुरिन्थियों 2:1-3)।

सुसमाचार को फैलाने के लिए दुख सहते हुए वह मसीह के दुखों में सहभागी हो रहा था। मसीह के काम के लिए दूसरों द्वारा अभी बहुत कुछ सहना बाकी हो सकता है; यीशु के चेलों द्वारा दुख सहने की उम्मीद समय के अन्त तक की जा सकती है। एक अर्थ में यीशु की विदाई के बाद पौलुस ने वहां से उठाया, जहां से यीशु ने छोड़ा था। वह यीशु के नमूने का पालन करते हुए सहनशीलता का नमूना बना रहा (1 पतरस 2:21)।

उन पर प्रकट किया गया भेद (1:25-27)

[25]जिस का मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिए मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा-पूरा प्रचार करूं। [26]अर्थात उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रगट हुआ है। [27]जिन पर परमेश्वर ने प्रकट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है? और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।

''जिस का मैं सेवक बना'' (1:25)

पौलुस ने अपने **कलीसिया** का **सेवक** (*diakonos*, ''कारिन्दा, मध्यस्थ, दूत'')[4] बनाए जाने की ओर संकेत किया। ''कलीसिया'' शब्द यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 25 में नहीं मिलता परन्तु इसका संकेत है। यहां पर पौलुस ने अपने आपको डीकन का पद पाए हुए के रूप में नहीं

बल्कि उसने कहा कि वह मसीह का सेवक है जिसे यीशु की ओर से यह ज़िम्मेदारी दी गई है। न केवल वह कलीसिया का सेवक था बल्कि वह सुसमाचार का ''मिनिस्टर'' या सेवक भी था (आयत 23)।

दमिश्क के मार्ग पर पौलुस को दर्शन देने के समय यीशु ने पौलुस को बताया था कि उसे ''सेवक'' (*hupēretēs*; प्रेरितों 26:16) होने के लिए चुना गया है। 1 कुरिन्थियों 4:1 में यीशु के लिए पौलुस की सेवा के लिए यही शब्द इस्तेमाल हुआ है। इसी प्रकार इसका इस्तेमाल यूहन्ना मरकुस (प्रेरितों 13:5); सेवकों या सहायकों (लूका 1:2; 4:20); और अधिकारियों (मत्ती 5:25; 26:58; यूहन्ना 7:32; 18:3) के सम्बन्ध में किया गया है।

इन आयतों में पौलुस ने समझाया कि वह न केवल मसीह बल्कि कलीसिया की सेवा भी करता था। परन्तु कलीसिया की आवश्यकताओं की सेवा करते हुए वह यीशु की सेवा कर रहा था। मसीही लोग अपने आपको अपने साथी मसीही लोगों से अलग करके यीशु की सही सेवा नहीं करते थे। यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया'' (मत्ती 25:40)।

''परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार'' (1:25)

पिता और पुत्र एक दूसरे के साथ मिलकर काम करते हैं। यीशु ने बेईमान भण्डारी के दृष्टांत में जिसका भण्डारीपन उससे छिनने को था, किसी दूसरे की सेवा में ज़िम्मेदारी के पद अर्थात **प्रबन्ध** (*oikonomia*) अर्थात भण्डारीपन के सिद्धांत का विचार दिया (लूका 16:1-4, 8)। मूल शब्द *oikonomia* के रूपों का अनुवाद ''भण्डारी'' या ''भण्डारीपन'' (लूका 12:42; 1 कुरिन्थियों 9:17; इफिसियों 3:2; तीतुस 1:7; 1 पतरस 4:10); ''भण्डारी'' (रोमियों 16:23); ''प्रबन्धक'' (गलातियों 4:2); और ''प्रबन्ध'' हुआ है (इफिसियों 1:10; 1 तीमुथियुस 1:4)।

यीशु ने पौलुस को सुसमाचार फैलाने का जिम्मा सौंपा था। अपनी जिम्मेदारी को पूरा करते हुए पौलुस ने माना कि उसका जीवन, समय, सम्पत्ति और योग्यताएं यीशु की हैं और उसका इस्तेमाल उसकी सेवा में किया जाए। इस कारण उसने पहले जो कुछ उसे सौंपा गया था उसका इस्तेमाल वफ़ादारी से करने की ज़िम्मेदारी समझी (1 कुरिन्थियों 4:1, 2)। पौलुस ने यह मानते हुए कि उसे यीशु को हिसाब देना होगा (2 कुरिन्थियों 5:10) मनुष्यों के बजाय परमेश्वर को प्रसन्न करने की कोशिश की (गलातियों 1:10-12)।

''मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा-पूरा प्रचार करूं'' (1:25)

पौलुस ने अपना भण्डारीपन स्वयं आरम्भ नहीं किया था। यीशु ने उसे अपनी इच्छा से दिया था।[5] उसके भण्डारीपन में पहले तो यहूदी (रोमियों 1:16; देखें प्रेरितों 13:14-16; 14:1; 17:1), फिर अन्यजाति थे (रोमियों 11:13; गलातियों 2:8, 9), कुलुस्सियों को शामिल किया गया था चाहे पौलुस का काम विशेषकर उनके साथ नहीं था।

पौलुस के भण्डारीपन का उद्देश्य हर किसी को, जिससे वह मिले यीशु का पूरा संदेश बताना था। उसने लगन के साथ इस काम को किया। उसने इफिसुस के प्राचीनों को बताया, ''... जो-जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने ... से कभी न झिझका''; ''क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी

मंशा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका'' (प्रेरितों 20:20, 27)।

कुलुस्सियों में केवल यहीं पर **परमेश्वर के वचन** की बात है। अन्य वाक्यांशों में ''सुसमाचार के सत्य वचन'' (1:5), ''मसीह का वचन'' (3:16) और ''वचन'' (4:3) साथ दिया गया है। यीशु ने पवित्र आत्मा के द्वारा नये नियम के लेखकों को (यूहन्ना 14:26; 16:13-15; इफिसियों 3:3-5) उस वचन को प्रकट किया जो उसे पिता की ओर से मिला था (यूहन्ना 12:49, 50; 17:8)।

परमेश्वर के वचन का प्रचार करना पौलुस के लिए सर्वप्रथम था, जैसा कि तीमुथियुस को उसकी ताड़ना में देखा जा सकता है (2 तीमुथियुस 4:2)। वह ''परमेश्वर का वचन'' ही सुनाता और सिखाता था।[6]

''अर्थात उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा'' (1:26)

भेद (*mustērion*) का अर्थ एक सच्चाई है जो प्रकट नहीं है और उसके प्रकट किए जाने तक उसे समझा नहीं जाता। जे. बी. लाइटफुट का कहना है, ''... ये शब्द सरल रूप में 'सच्चाई जो कभी छुपी हुई थी परन्तु अब प्रकट हो गई है' 'सच्चाई जो बिना विशेष प्रकाशन के अज्ञात रहनी थी' का संकेत देता है।''[7] इसका अर्थ वह नहीं है जो रहस्यमय या उसका पता नहीं लगाया जा सकता। पुराने नियम के भविष्यद्वाणी के कुछ कथन नये नियम के प्रकाशन की सहायता के बिना रहस्य ही बने रहते, उनकी कभी समझ न आती (2 कुरिन्थियों 3:14)।

यीशु ने चेलों को बताया कि राज्य के भेदों को जानने की समझ भीड़ को नहीं, उन्हें दी गई थी (मत्ती 13:11)। पौलुस ने उद्धार की परमेश्वर की योजना और यीशु के द्वारा आशिषों के सम्बन्ध में किसी शब्द का इस्तेमाल किया।[8] भेद का मुख्य भाग यह था कि परमेश्वर ने अन्यजातियों और यहूदियों को एक ही परिवार के लोगों के रूप में ग्रहण करना था (इफिसियों 3:3, 6)।

यीशु के आने से पहले मसीह से सम्बन्धित पुराने नियम की भविष्यद्वाणियां **समयों और पीढ़ियों से गुप्त** रही थी। उन पर तब तक पर्दा पड़ा रहा जब तक परमेश्वर ने अपने ठहराए हुए समय में उनका अर्थ बनाने का निश्चय नहीं किया। इफिसियों 3:3-5 में पौलुस ने इसका संकेत दिया। वहां पर उसने कहा कि हम उसे जो उसने लिखा था पढ़कर ''बीते युगों'' के भेद को समझ सकते हैं।

पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को समझने के लिए और प्रकाशन की आवश्यकता का अच्छा उदाहरण हबशी खोजा है। उसे तब तक इस बात की समझ नहीं थी कि यशायाह 53 का क्या अर्थ है जब तक फिलिप्पुस ने उसे यीशु के विषय में बताया नहीं था (प्रेरितों 8:30-39)।

यीशु और उसके आगमन से जुड़ी घटनाओं से सम्बन्धित भविष्वाणियां संसार के इतिहास के आरम्भ से शुरू हो गई थीं। यीशु के आगमन के लगभग 1500 वर्ष पहले व्यवस्था के दिए जाने से पहले और बाद में उसके सम्बन्ध में कई बातें कहीं गई थीं। इन बातों को तब तक समझना लगभग असम्भव था जब तक यीशु ने अपने जीवन और शिक्षा के द्वारा भविष्यद्वाणियों की पूरी तस्वीर को मिलाने में सहायता नहीं की (लूका 24:44)। सचमुच उद्धार की परमेश्वर की योजना में उसकी भूमिका एक भेद था जो पिछली कई पीढ़ियों से गुप्त रहा था।

''परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रगट हुआ है'' (1:26)

भेद पहले गुप्त था परन्तु अब प्रकट किया जा चुका है। परमेश्वर ने इसे अपनी ही समयसारिणी के अनुसार प्रकट किया है (गलातियों 4:4)। अब यह समझ में आने वाली सच्चाई है।

शुभसमाचार की मुख्य बात जो भेद में गुप्त और छिपी हुई थी स्वयं यीशु है (1 तीमुथियुस 3:16; इफिसियों 3:4-6)। उसके आने से न केवल इस्राएलियों को आशीष मिलनी थी बल्कि अन्यजातियों सहित सब लोगों को आशीष मिलनी थी। इस सच्चाई से सम्बन्धित पुराने नियम के कई कथनों में इसका संकेत था।[9]

नये नियम के द्वारा भेद पवित्र लोगों पर प्रकट कर दिया गया है। कुलुस्से के लोग अकेले नहीं थे जिन्हें इस भेद का पता चल सकता था कि सुसमाचार प्रकट कर दिया गया है, क्योंकि अब यह पूरे संसार को सुनाया जा चुका है (मरकुस 16:15)। परमेश्वर के पवित्र लोग वे हैं जिन्हें भेद समझ आ गया है। यह उन पर व्यक्तिगत रूप में और सीधे तौर पर प्रकट नहीं किया गया था। प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर यह भेद पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकट किया गया था (इफिसियों 3:3-5)। उन्होंने इसे पवित्र आत्मा के द्वारा उन्हें बताए गए शब्दों में दूसरों के साथ साझा किया (1 कुरिन्थियों 2:9-13)।

कुछ लोगों ने 1 कुरिन्थियों 2:14, 15 से निष्कर्ष निकाल लिया है कि आज पवित्र आत्मा की सहायता के बिना परमेश्वर के वचन को समझा नहीं जा सकता है। पौलुस ने यह नहीं कहा था कि गैर-मसीही लोग परमेश्वर के वचन को समझ नहीं सकते हैं। इसके विपरीत उसने लिखा कि उसने लिखा कि शारीरिक मनुष्य आत्मा की बातों को ग्रहण नही करता क्योंकि उसके लिए मूर्खता हैं। वह आत्मिक बातों को सही सोच के साथ समझने की कोशिश नहीं करेगा क्योंकि उसके लिए वे मूर्खता की बातें हैं (1 कुरिन्थियों 1:18, 23)।

यदि परमेश्वर का वचन खोए हुए लोगों द्वारा समझा नहीं जा सकता तो उनके लिए इसे पढ़ना या प्रचार किए जाने और सुनना किसी काम का नहीं होना था। सुसमाचार (इफिसियों 1:13) खोए हुओं को सुनाया जाना *आवश्यक* है क्योंकि इसके संदेश में उनके उद्धार का एकमात्र स्रोत है (प्रेरितों 11:14; रोमियों 1:16)। परन्तु खोए हुए सब लोग इसे ग्रहण नहीं करेगे क्योंकि उन में से अधिकतर की आत्मिक मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं (मत्ती 7:13, 14)।

''जिन पर परमेश्वर ने प्रकट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है'' (1:27)

अन्यजातियों (ethne, जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द ethnic मिला है) का अर्थ ''लोग'' या ''जातियां'' है। इस्राएली लोग अपने आपको परमेश्वर के वास्तविक लोग मानते थे। संसार के शेष लोग ''जातियां'' थीं जिन्हें अन्यजातियां कहा जाता था। यानी जो परमेश्वर के लोग (देखें लैव्यव्यवस्था 26:45; यहेजकेल 5:8)। जिस भेद की इस्राएलियों को समझ नहीं आई वह यह था कि अन्यजातियों ने परमेश्वर के लोगों के रूप में एक दिन ग्रहण किया जाना था। इस्राएलियों ने यदि आपनी आंखें बंद न की होती तो वे इससे पवित्र शास्त्र को पढ़कर यह निष्कर्ष निकाल सकते थे (देखें 2 कुरिन्थियों 3:14)। परमेश्वर ने अब्राहम को वचन दिया था कि सब जातियां,

न कि केवल उसकी संतान, उसके वंश के द्वारा आशीष पाएंगी (उत्पत्ति 12:3; 22:18)। इस्राएल जाति के द्वारा परमेश्वर ने लोगों में महिमा पानी थी (भजन संहिता 18:49; 117:1)।

महिमा का मूल्य पौलुस द्वारा कई बार व्यक्त की गई अवधारणा है (देखें रोमियों 9:23; फिलिप्पियों 4:19)। उसने मसीही लोगों को मिलने वाली आशिषों के लिए ''मूल्य'' शब्द इस्तेमाल किया (रोमियों 2:4; इफिसियों 1:7)।

''वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है'' (1:27)

अगला वाक्यांश इस भेद की महिमा के मूल्य की बात करता है जिसकी चर्चा पौलुस कर रहा था: **वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।** कुलुस्सियों की महिमा की आशा मसीह के उन में होने पर निर्भर थी। मसीह के भीतर वास करने की धारणा नये नियम में और कहीं मिलती है (यूहन्ना 17:23; रोमियों 8:10; 2 कुरिन्थियों 13:5; गलातियों 2:20; 4:19)। यीशु ने प्रतिज्ञा की कि वह और पिता उनके जो उससे प्रेम करते और उसके वचन को मानते हैं साथ वास करेंगे (यूहन्ना 14:23)। मसीह विश्वास के द्वारा मसीही लोगों के हृदय में रहता है (इफिसियों 3:17)। पवित्र आत्मा मसीह का आत्मा है जिसके द्वारा यीशु कार्य करता है (1 पतरस 1:11) और जिसके द्वारा वह मसीही लोगों में वास भी करता है (रोमियों 8:9, 11; 1 कुरिन्थियों 3:16; 6:19; इफिसियों 2:22; 2 तीमुथियुस 1:14)। आत्मा ब्याने के रूप में अर्थात स्वर्गीय मीरास के आश्वासन के रूप में दिया जाता है (2 कुरिन्थियों 1:21, 22; इफिसियों 1:13, 14)।

''तुम'' जिस ''में'' मसीह है, बहुवचन है। यीशु समूह के रूप में अपने लोगों में है और व्यक्तिगत रूप में उन में है। ''महिमा'' से पौलुस के कहने का अर्थ कुलुस्सियों को मिलने वाला अन्तिम प्रतिफल था। मसीही लोग स्वर्ग में रहने की राह देख सकते थे (2 कुरिन्थियों 5:1; 1 पतरस 1:3, 4)।

उनके लिए उसका लक्ष्यः मसीह में सम्पूर्णता (1:28, 29)

[28]जिस का प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।

''जिस का प्रचार करके हम'' (1:28)

पौलुस अपनी और तीमुथियुस की बात कर रहा था या वह सम्पादकीय **हम** का इस्तेमाल कर रहा था। इसका पक्का उत्तर नहीं दिया जा सकता। उसके कहने के ढंग का अर्थ वही हो सकता है जो किसी लेखक के अकेला होने पर यह लिखने के समय होता है, ''हम ऐसी सोच पर आपत्ति करते हैं।'' पौलुस अपनी और उन सब की बात कर रहा हो सकता है जो यीशु को अविश्वासी संसार में प्रस्तुत करते हैं। दूसरी ओर अगली आयत में ''मैं'' कहना यह संकेत दे सकता है कि ''हम'' लिखते समय वह अपनी ही बात कर रहा था।

पौलुस के प्रचार का (1 कुरिन्थियों 2:1, 2) और दूसरों के प्रचार का केन्द्र यीशु था (प्रेरितों

8:5, 35)। बुनियादी संदेश मसीह का क्रूस चाहे संसार को मूर्खता लग सकता है (1 कुरिन्थियों 1:18) पर यह परमेश्वर के ''ज्ञान'' (*sophia*; 1 कुरिन्थियों 1:24; कुलुस्सियों 1:9 भी देखें) पर प्रकाशित पर आधारित है।

1 थिस्सलुनीकियों 2:3-12 पौलुस ने दूसरों को दिखाने और समझाने का अपना व्यक्तिगत ढंग बताया। वह गम्भीर था और भ्रम, अशुद्धता, छल, चापलूसी, लोभ, या मनुष्यों से आदर पाने के लिए प्रचार नहीं करता था (आयत 3-6)। परमेश्वर को प्रसन्न करने की कोशिश करते हुए वह दूध पिलाने वाली माता की तरह ही कोमल और भाइयों के प्रति लगाव रखने वाले पिता की तरह पुरजोश था क्योंकि वह उसे प्रिय थे (आयतें 7-11)। कई बार उनके कारण अपने सच्चे लगाव के कारण उनकी ताड़नाओं के दौरान वह रो भी देता था (प्रेरितों 20:19, 31; 2 कुरिन्थियों 2:4; फिलिप्पियों 3:18)।

''हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से
हर एक मनुष्य को सिखाते हैं'' (1:28)

हर एक मनुष्य लिखकर पौलुस ने सुसमाचार के सार्वभौमिक होने की पुष्टि की। यह हर एक के लिए है और कोई भी इससे अछूता नहीं है, चाहे सब इसे ग्रहण नहीं करते (रोमियों 10:16; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8)। ''मनुष्य'' (*anthrōpos,* ''मनुष्य जाति'') पौलुस के मन में दोनों है। पौलुस के मन में यदि पुरुष होता तो वह *anēr* शब्द का इस्तेमाल करता जिसका अर्थ ''नर'' है जैसे उसने 1 कुरिन्थियों 11:7-9 में किया। वह हर किसी को चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, सारे ज्ञान के साथ सिखाता था।

पौलुस को हर व्यक्ति के मसीह के लिए पूरी तरह से बढ़ने की आवश्यकता की समझ थी। उसने न केवल विश्वासियों की आवश्यकताओं की बल्कि अविश्वासियों की आवश्यकताओं की भी बात की। उसकी जवाबदेही दोनों के लिए थी ''मैं यूनानियों और अन्यजातियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्ज़दार हूं'' (रोमियों 1:14)।

जता देते में लोगों को चेतावनी देकर दुराचार के परिणामों और नास्तिक जीवन जीने और भ्रमित बातें **सिखाते** होने के परिणामों की ओर ध्यान दिलाने का विचार शामिल है। इसमें सिखाने के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ढंगों की बात है, क्योंकि मसीही लोगों को अपने जीवनों से गलत बातें निकालने के साथ-साथ सही करना आवश्यक है। जोर चाहे धर्मी जीवन पर दिया गया है पर बुराई से बचने के महत्व को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जाना चाहिए।

यीशु को ''मत'' कहने की कोई बेचैनी नहीं थी। पहाड़ी उपदेश में उसने अपने सुनने वालों को बताया कि वे क्या करें। परन्तु उसने उन्हें यह भी बताया कि क्या न करें (मत्ती 5:34; 6:2, 3, 5, 16, 19, 25, 31, 34; 7:1, 6)। मसीहियत सबसे सकारात्मक है परन्तु इसमें मूर्खतापूर्ण और बुरे कामों में लगने की चेतावनियां भी हैं।

यीशु की शिक्षाएं परमेश्वर के **ज्ञान** पर आधारित हैं। पौलुस ने संसार के ज्ञान (1 कुरिन्थियों 2:13) के बजाय परमेश्वर का ज्ञान बताया (1 कुरिन्थियों 1:24, 30; 2:7)। उसने भाषण की तकनीकों या मानवीय ज्ञान की ओर ध्यान दिलाकर मनाने की कोशिश नहीं की बल्कि उसने केवल परमेश्वर का संदेश दिया (1 कुरिन्थियों 2:1-5)।

''कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें'' (1:28)

पौलुस के प्रचार करने और समझाने का कारण दिया गया है। फिर से पौलुस ने उत्तम पुरुष बहुवचन (**हम**) का इस्तेमाल केवल अगली आयत में उत्तम पुरुष एक वचन (''मैं'') वापस लाने के लिए किया। जताने और सिखाने का पौलुस को पूर्ण और परिपक्व मसीही बनाने के लिए आवश्यक था। प्रचार के काम का उद्देश्य लोगों का मसीह में लाने (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27) और उन्हें उस में पूरी तरह से बढ़ाने के लिए समझाना होता है। किसी को मसीह में लाना प्रचारक या शिक्षक के काम का केवल आरम्भ है। परिपक्वता में बढ़ते रहना यीशु के हर मानने वाले का लक्ष्य होना चाहिए (इफिसियों 4:11-13; इब्रानियों 6:1)।

पौलुस ने यह नहीं कहा कि वह कब और किसे **मसीह में सिद्ध करके उपस्थित** करेगा। शायद वह उस समय की राह देख रहा था जब न्याय के दिन में सब लोग यीशु के सामने पेश होंगे। उसकी इच्छा इन भाइयों को हर मसीही गुण में बढ़ाने में सहायता करने की थी ताकि वह यीशु की वापसी पर उन पर आनन्द कर सकें (1 थिस्सलुनीकियों 2:19, 20)। उसने अपने काम को करके अपना प्रतिफल पाने की ठान ली थी, चाहे कइयों ने खोए जाने को चुना था (1 कुरिन्थियों 3:12-15) और कोई भी हर मसीही गुण पूर्ण रूप में नहीं बढ़ा सकता।

आयत 28 में यूनानी शब्द *teleios* के लिए अनुवाद ''पूर्ण'' 4:12 में अनुवाद ''सिद्ध'' (NASB) (*teleioi*, उसकी मूल शब्द से) से बेहतर है। मत्ती 19:21 में इसका अनुवाद ''सिद्ध'' हुआ है परन्तु कहीं और ''परिपक्व।''[10] अन्य आयतों में इसका अनुवाद ''सिद्ध'' हुआ है; परन्तु ''परिपक्व'' या ''पूर्ण'' बेहतर अनुवाद होना था। ''सिद्ध'' शब्द भ्रमित करने वाला है। मनुष्यजाति को परमेश्वर की सिद्धता नहीं मिल सकती (मत्ती 5:48)। पौलुस उससे जो पूरा है अधूरे को अलग कर रहा था (1 कुरिन्थियों 13:10)। उसका यह मानना नहीं था कि कोई इसलिए मसीही सिद्ध है (फिलिप्पियों 3:15), न ही वह किसी से भी सिद्ध होने की उम्मीद रखता था (कुलुस्सियों 4:12)। याकूब मसीही लोगों से सिद्ध होने की उम्मीद नहीं रखता था (याकूब 1:4; 3:2)। निश्चय ही यूहन्ना भी नहीं मानता था कि किसी मानवीय जीव में सिद्ध प्रेम हो सकता है (1 यूहन्ना 4:18)।

आत्मिक सम्पूर्णता और परिपक्वता का आधार महिमा की आशा मसीह का वास करना है (आयत 27)। आत्मिक रूप में बढ़ा होने के कारण जो मसीह में है अंदरूनी विकास होना आवश्यक है जो भक्तिपूर्ण जीवन में दिखाया जाता है। पूरी तरह से विकसित मसीही यीशु की शिक्षा के एक पहलू में विलक्षणता पाने वाले से बढ़कर है। चाहे वह हर गुण में पूरी तरह से कभी पूर्ण नहीं हो सकता पर वह आत्मिक, नैतिक या शैक्षणिक और सामाजिक रूप में मसीही जीवन और सेवा के हर पहलू में परिपक्व है तो वह पूरी तरह से विकसित है।

''और इसी के लिए मैं उस की उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूं'' (1:29)

पौलुस के प्रयासों का एक **के लिए** यानी (उद्देश्य) वह लोगों को बदलकर उन्हें मसीह जैसे बनाने के लिए समर्पित था। ताकि वे आगे से अपरिपक्व मसीही न रहें (इफिसियों 4:13-15)।

परिश्रम से पौलुस के कहने का अर्थ वह कठिन काम था जो यीशु के लिए उसकी सेवा में

किया जाता था। **करता हूं** (*agōnizomenos*) में कष्टदायक पीड़ादायक प्रयास का विचार है। पौलुस द्वारा इसका इस्तेमाल सचमुच की लड़ाई (यूहन्ना 18:36) और प्रतीक के रूप में धावक के मुकाबले (1 कुरिन्थियों 9:25) और मसीही जीवन (1 तीमुथियुस 6:12; 2 तीमुथियुस 4:7) के सम्बन्ध में किया गया।

इसका और अक्षरश: अनुवाद इस प्रकार होगा, ''... उसकी ऊर्जा के अनुसार करते हुए जो मुझे सामर्थ के अनुसार ऊर्जावान करता है।'' **शक्ति** (*energeia,* ''ऊर्जा'') संज्ञा और **प्रभाव डालती है** *energoumenēn,* ''ऊर्जा देता'' कृदंत जान-बूझकर शब्दों का खेल हो सकता है। दो उपयोग मिलकर पौलुस में ऊर्जा और शक्ति के काम करने के स्रोत पर ज़ोर देते हैं। जो शक्ति पौलुस में काम कर रही थी वह यीशु की ओर से थी, जो, पवित्र आत्मा के द्वारा, सब मसीही लोगों को आत्मिक रूप में मज़बूत करती है (इफिसियों 3:16)।

अनुवादित शब्द **सामर्थ के साथ** का यूनानी शब्द *dunamis* है। बेशक पौलुस को बिना किसी मनुष्य की सहायता के अन्य प्रेरितों की तरह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था। इसने उसे आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी थी (2 कुरिन्थियों 12:12)। पौलुस को वही सामर्थ मिली थी जिसकी प्रतिज्ञा यीशु ने प्रेरितों 1:8 में अन्य प्रेरितों से की थी। इस ''शक्ति'' को सम्भवतया इतनी शारीरिक नहीं समझा जाना चाहिए कि यह आत्मिक लगे। पौलुस का बाहरी व्यक्तित्व, अर्थात उसका शरीर कमज़ोर हो रहा था परन्तु उसकी भीतरी सामर्थ प्रतिदिन नई होती जा रही थी (2 कुरिन्थियों 4:16)।

प्रासंगिकता

तैयार सेवक

पौलुस ने हमारे लिए एक अच्छा नमूना बनकर समर्पण दिखाया जिसने उसे मसीह का एक बड़ा सेवक बना दिया। उसने लिखा कि हम उसकी सी चाल चलें (1 कुरिन्थियों 4:16; फिलिप्पियों 3:17) जैसे वह मसीह की सी चाल चलता था (1 कुरिन्थियों 11:1)। उसने फिलिप्पियों को समझाया, ''जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण की, और सुनी, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा'' (फिलिप्पियों 4:9)। हम सेवक बनने को तैयार होकर जो कलीसिया की सेवा करते हो और हर किसी को मसीह में सिद्ध पेश करने के लिए काम करते हैं पौलुस की सी चाल चल सकते हैं।

हमें मसीह के लिए कठिनाइयों को सहने के लिए तैयार होना आवश्यक है। यीशु ने हनन्याह को दर्शन देने के समय उसे बताया था कि वह पौलुस को दिखाएगा कि उसे उसके नाम की खातिर कैसे दुख सहने होंगे (प्रेरितों 9:16)। अपनी सेवकाई के आरम्भ से ही पौलुस को मसीह के सेवक के रूप में उसे पेश आने वाली समस्याओं का पता था। इसके बावजूद वह प्रेरित होने के लिए बुलाया जाने के बाद यीशु की आज्ञा मानता रहा (प्रेरितों 26:19; गलातियों 1:1)।

पौलुस ने सुसमाचार सुनाने में आने वाली कुछ परेशानियों का संकेत दिया (2 कुरिन्थियों 6:4-10; 11:23-28)। कठिनाई के इन समयों में उसे कई अन्दरूनी संघर्षों का सामना करना पड़ा जैसे निराशा, शोक और सभी कलीसियाओं की चिंता उसने कुरिन्थुस के मसीही लोगों के

नाम लिखते हुए उनके साथ रहते समय उस तनाव को दिखाया जो उसे उनके साथ ''निर्बलता और भय के साथ, और बहुत थरथराता हुआ'' उसे हुआ था (1 कुरिन्थियों 2:3)। पौलुस की चिंता को समझते हुए मसीह ने उसे कुरिन्थुस में रहते समय भयभीत न होने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए दर्शन दिया (प्रेरितों 18:9, 10)। उसने रात दिन परिश्रम किया (1 थिस्सलुनीकियों 2:9) ताकि वह प्रभु की सेवा करके दूसरों के ऊपर बोझ न बने। यदि हम पौलुस के नमूने को मानते हैं तो हम ''दृढ़ और अटल, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते'' जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:58)।

मसीह के प्रेम ने बलिदान ने पौलुस को उसके लिए जीने के लिए प्रेरित किया (गलातियों 2:20)। प्रेम के कारण विवश होकर उसने जहां भी हो सके, जिसे भी हो सके सुसमाचार सुनाने के अपने दायित्व को महसूस किया। उसने लिखा, ''मैं यूनानियों और अन्यजातियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्ज़दार हूं। सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हैं'' (रोमियों 1:14, 15)।

दायित्व और कर्त्तव्य मसीही लोगों के लिए नकारात्मक शब्द नहीं हैं। यीशु ने लोगों की परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने को दायित्व समझा, क्योंकि वह अपनी नहीं बल्कि पिता की इच्छा को पूरा करने को आया (यूहन्ना 4:34; 5:30; 6:38)। पौलुस मानता था कि उस पर मसीह की सेवा करने का दायित्व है (रोमियों 1:14; 1 कुरिन्थियों 9:16)। यीशु ने एक सेवक की बात बताई जो खेत में काम करता था और घर में अपने स्वामी के आने पर भी उसे उसकी राह देखनी आवश्यक थी। इस दृष्टांत से यीशु ने यह निष्कर्ष निकाला: ''इसी रीति से तुम भी, जब उन सब कामों को कर चुको जिस की आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, हम निकम्मे दास हैं; कि जो हमें करना चाहिए था वही किया है'' (लूका 17:10; NKJV में ''जो हमारा कर्त्तव्य था।'')। हमें मसीही सेवा को गम्भीरता से लेना और उन बातों के लिए ज़िम्मेदार होना आवश्यक है जो यीशु हम से करवाना चाहता है।

हमें अपने आपको कलीसिया की सेवा में देना चाहिए। मसीही जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग एक दूसरे की सेवा करना है (गलातियों 5:13; 1 पतरस 4:10)। पौलुस ने अपने साथी मसीही लोगों के लिए आनन्द और स्वेच्छा से अपने आपको दे दिया। ''और यदि मुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा के साथ अपना लोहू भी बहाना पड़े तौभी मैं आनन्दित हूं, और तुम सब के साथ आनन्द करता हूं'' (फिलिप्पियों 2:17)। इस प्रकार उसने कलीसिया के लिए यीशु के दुख सहने को पूरा करने की कोशिश की (आयत 24)।

हमें ये बातें करने को कहा गया है:

- आदर में एक दूसरे को पहल दो (रोमियों 12:10)।
- एक-दूसरे की परवाह करो (1 कुरिन्थियों 12:25)।
- एक-दूसरे को सिखाओ (कुलुस्सियों 3:16)।
- एक-दूसरे को सांत्वना दो (1 थिस्सलुनीकियों 4:18)।
- एक-दूसरे को ऊंचा करो (1 थिस्सलुनीकियों 5:11)।
- एक-दूसरे से मिलकर रहो (1 थिस्सलुनीकियों 5:13)।

- एक-दूसरे की हिम्मत बढ़ाओ (इब्रानियों 3:13)।
- एक-दूसरे को प्रेम और भले कामों में उक्साओ (इब्रानियों 10:24)।
- एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करो (याकूब 5:16)।
- अपने भाइयों के लिए अपने प्राण दे दो (1 यूहन्ना 3:16)।
- एक-दूसरे से प्रेम रखो (1 यूहन्ना 4:7)।

मसीही लोगों की दूसरे मसीही लोगों के प्रति जिम्मेदारी है। प्रश्न यह नहीं होना चाहिए कि ''कलीसिया मेरे लिए क्या कर सकती है?'' बहुत अधिक मसीही लोगों का व्यवहार यही है। प्रश्न यह होना चाहिए कि ''मैं दूसरों के लिए क्या कर सकता हूं?'' यीशु का यही व्यवहार था। ''हम में से हर एक अपने पड़ोसी को उसकी भलाई के लिए सुधारने के निमित्त प्रसन्न करे। क्योंकि मसीह ने अपने आपको प्रसन्न नहीं किया, पर जैसा लिखा है, तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी'' (रोमियों 15:2, 3)।

यीशु ने दिखाया कि अपने अनुयायियों में सबसे बड़ा वह है जो दूसरों की सेवा करता है (मत्ती 20:26; 23:11)। सब मसीही लोगों के लिए अपने आपको दीन बनाना आवश्यक है जैसे मसीह ने बनाया, ताकि वे दूसरों की सेवा कर सकें (फिलिप्पियों 2:6-8)। यीशु का धर्म सेवा का धर्म है।

हम अपने हर जानने वाले को मसीह में सम्पूर्ण प्रस्तुत करने के लिए परिश्रम करते हैं। हम में से हर किसी में अच्छे गुण हैं परन्तु हमारे अन्दर कमज़ोरियां भी हैं। अच्छा लक्ष्य यीशु के लिए सम्पूर्ण जीवनों को तैयार करना है।

मसीही लोगों के रूप में हमें ''हर एक रोकने वाली वस्तु और उलझाने वाले पाप को दूर करके'' प्रोत्साहित किया जाता है (इब्रानियों 12:1)। हमें अबोध बालक नहीं बने रहना है बल्कि बुनियादी नियमों से आगे मसीह में बढ़ने की चाह रखना है (इब्रानियों 5:12—6:1)।

कुलुस्सियों 1:28 में ''सिद्ध'' के लिए *teleios* वही यूनानी शब्द है जिसका अनुवाद इफिसियों 4:13 में ''सिद्ध'' हुआ है। इस शब्द का अनुवाद ''सम्पूर्ण'' भी हुआ है (NASB)। पौलुस सब लोगों के लिए सम्पूर्णता का इच्छुक था यानी यह कि वह यीशु के स्वभाव में बढ़ें (इफिसियों 4:13)। हमें अपने जीवनों में सब मसीही गुणों को बढ़ाकर एक-दूसरे को यीशु के लिए जीना सीखने में सहायता करने की कोशिश करनी चाहिए (गलातियों 5:22, 23; 2 पतरस 1:5-7)। इस प्रकार से हम मसीह में सिद्ध यानी सम्पूर्ण हो सकते हैं।

हमें एक दूसरे को मसीह को और समर्पित होने और अपने जीवनों में मसीह के गुणों को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके लिए पापपूर्ण जीवन के लिए एक दूसरे को डांटने के साथ-साथ यीशु के लिए अपनी बेहतरीन सेवाएं देने के लिए एक दूसरे को प्रोत्साहित करना हो सकता है।

कष्ट के बावजूद सेवा करना (1:24-26)

यीशु और उसकी कलीसिया पौलुस के मन में सबसे पहले थे और वह दोनों के लिए अपने आपको स्वेच्छा से देने को तैयार था। वह यीशु की सेवा करने का इच्छुक था चाहे इसका अर्थ उसका अपना बलिदान देना था। पौलुस मसीही लोगों के लिए एक नमूना है (1 कुरिन्थियों

11:1)। उसके जीवन और बातों से हम क्या सीख सकते हैं?

पौलुस ने मसीह के कष्ट को सहा (आयत 24)। यीशु ने मसीही लोगों को सताव से छूट का वचन नहीं दिया है। इसके विपरीत उसके लिए जीने वालों को सताव की प्रतिज्ञा की गई है (2 तीमुथियुस 3:12)। इस कारण हम अपने विरुद्ध उठने वाले विद्रोह की उम्मीद कर सकते हैं (1 पतरस 4:12)। ऐसे मामलों में हम उनके लिए जो हमें हानि पहुंचाते हैं श्राप नहीं बल्कि आशिष और प्रार्थना करें (मत्ती 5:44; रोमियों 12:14)। यीशु धीरज से दुख सहने का हमारा नमूना है (1 पतरस 2:21)।

मसीह की तरह पौलुस ने कलीसिया अर्थात देह के लिए स्वेच्छा से दुख सहा (आयत 24)। मसीही होने के नाते हमारे मन में कलीसिया को सबसे ऊंचा स्थान मिलना चाहिए। इसमें प्रार्थनाएं, सिखाने के प्रयास, धन का उपयोग और जीने का ढंग शामिल हैं। कभी भी एक मसीही व्यक्ति का जीवन ऐसा नहीं होना चाहिए जिससे कलीसिया की बदनामी हो। हमें कलीसिया के लिए अपने आपको देने को तैयार रहना आवश्यक है जैसे मसीह ने अपने आपको इसके लिए दे दिया (इफिसियों 5:25; 1 यूहन्ना 3:16)।

पौलुस ने अपने दुख सहने को भण्डारीपन की एक किस्म के रूप में देखा (आयत 25)। उसने इस बात को समझा कि वह यीशु के लिए काम कर रहा है। वह केवल अपने समय, सम्पत्ति और गुणों का भण्डारी था। मसीही लोग इसी प्रकार से सोचना सीख सकते हैं। हमारे घर, बैंक खाते, और सम्पत्तियां यीशु की हैं। जो कुछ भी हम हैं और जो कुछ भी हमारा है वह सब उसी का है। हमें अपनी आशिषों का इस्तेमाल पूरे यत्न से यीशु के लिए करना चाहिए।

कुछ मसीही लोगों की सोच ऐसी लगती है कि उनके सप्ताह के पहले दिन चंदा इकट्ठा किए जाने पर उनके प्रभु को देने के बाद बाकी का पैसा उनका होता है और वे उसे चाहे जैसे इस्तेमाल कर सकते हैं। परमेश्वर न केवल चंदे को देखता है बल्कि वह इस बात को भी ध्यान में रखता है कि कोई उस सब का इस्तेमाल कैसे करता है जो उसके पास है।

दूसरों को उद्धार की ओर ले जाना (1:26-28)

पौलुस ने एक भेद को प्रकट करने के लिए परिश्रम किया (आयतें 26, 27)। पुराने नियम के अधीन उद्धार की परमेश्वर की योजना का किसी को पता नहीं था। नये नियम के प्रकट किए जाने तक यह भेद ही रही थी (इफिसियों 3:3-5)। पौलुस का काम मनुष्यजाति को बचाने और एक करने की परमेश्वर की योजना को दूसरों को समझने में सहायता करना था। आज भी बाइबल उन लोगों के लिए एक भेद ही है जो उद्धार की शर्तों को नहीं समझते हैं। मसीह के अनुयायियों को दूसरों को यह समझने में सहायता करनी आवश्यक है कि परमेश्वर उनके उद्धार के लिए क्या चाहता है।

इसके अलावा पौलुस का लक्ष्य दूसरों को मसीह में सम्पूर्ण होने में सहायता करना था (आयत 28)। पौलुस का उद्देश्य लोगों को न केवल मसीही जीवन आरम्भ करने में अगुआई करना बल्कि उन्हें मसीह के वफ़ादार अनुयायियों के गुण विकसित करके सिद्ध मसीही बनने में सहायता करना भी था। मसीही व्यक्ति को दिया गया कमीशन दूसरों को यीशु जैसे बनने में प्रोत्साहित करना है। कलीसिया के अगुओं की विशेष ज़िम्मेदारी यही है जिन्हें पवित्र लोगों को

सिद्ध करने और बढ़ने में सहायता करने का काम दिया गया है (इफिसियों 4:11-13)। मसीह में सिद्ध बनने का तरीका उसके जैसे आत्मिक गुणों में बढ़ना है।

दूसरों की सहायता करना (1:29)

मसीह की सेवा में दूसरों की वैसे सेवा करना है जैसे यीशु ने और पौलुस ने दूसरों की सेवा की। अन्तिम भोज के बाद प्रेरित इस बात पर झगड़ा कर रहे थे कि उन में सबसे बड़ा कौन है (मत्ती 22:24-27)। यीशु ने उन्हें यह समझाने के लिए कि जो लोग सेवा करते हैं वे सबसे बड़े हैं एक उदाहरण दिया (यूहन्ना 13:1-15)। एक दास का काम करके अपने आपको विनम्र करते हुए उसने प्रेरितों के पांव धोए। यीशु के सबसे बड़े चेले वे लोग हैं जो एक चित्त होकर उसकी और दूसरों की सेवा करते हैं।

पौलुस ने अपने स्वयं के प्रयासों का वर्णन किया (आयत 29)। उसने दूसरे किसी से भी बढ़कर परिश्रम किया और कष्ट सहे (1 कुरिन्थियों 15:10; 2 कुरिन्थियों 11:23-28)। आने वाले न्याय, प्रभु के भय, मसीह के प्रेम और इस तथ्य के कारण कि यीशु उसके लिए मरा पौलुस मसीह को प्रसन्न करने की इच्छा से भरा था (2 कुरिन्थियों 5:14, 15; गलातियों 2:20)। यह ध्यान में रखते हुए कि पौलुस ने इतनी समर्पित सेवा क्यों की, हर मसीही सेवा के अपने विशेष स्थान को भरने के लिए प्रेरित हो सकता है (रोमियों 12:6-8)।

परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा सेवा करना (1:29)

परमेश्वर पौलुस के द्वारा काम कर रहा था (आयत 29)। यदि सारा काम परमेश्वर ही करता तो मनुष्य की आवश्यकता न होती। परन्तु परमेश्वर ने तेजस्वी सुसमाचार मसीही लोगों के हाथों में सौंप दिया है (2 कुरिन्थियों 4:7)। हम वे हथियार हैं जिनके द्वारा वह सेवा करता है और दूसरों तक अपने वचन को फैलाता है (1 कुरिन्थियों 3:5-9)। यीशु की आज्ञा मसीही लोगों के लिए सारे संसार में उसका संदेश ले जाने की है (मत्ती 28:19; लूका 16:15, 16)। वह उन्हें मज़बूत करता है जो स्वेच्छा से उसकी आज्ञा मानते हैं (फिलिप्पियों 4:13)। मसीही लोगों को यीशु की सेवा के हर अवसर को गम्भीरता से लेना चाहिए। वह खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के उस काम को जिसे उसने आरम्भ किया था पूरा करने के लिए अपने अनुयायियों पर निर्भर है।

टिप्पणियां

[1]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ कोलोसियंस एंड फिलेमोन,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1964), 86. [2]एच. सी. जी. मोउल, द *एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एंड कॉलेजस (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1893; रिप्रिंट 1902), 90. [3]एडुअर्ड स्क्वीज़र, द *लैटर टू द कोलोसियंस: ए कमैंट्री,* अनु. एंड्रयू चेस्टर (ज़्यूरिक: बेन्ज़ाइगर वरलग, 1976; रिप्रिंट, मिनियापोलिस: आगसबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1982), 105-6. [4]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर*, 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो, 2000), 230. [5]देखें रोमियों 1:1; 1 कुरिन्थियों 1:1; 2 कुरिन्थियों 1:1; गलातियों 1:1;

कुलुस्सियों 1:1; 1 तीमुथियुस 1:1; 2 तीमथियुस 1:1. [6]देखें प्रेरितों 13:46; 14:25; 15:35, 36; 16:32; 17:13; 18:5, 11; 1 कुरिन्थियों 15:2; फिलिप्पियों 1:14; 1 थिस्सलुनीकियों 2:13. [7]जे. बी. लाइटफुट, *सेंट पॉल'स एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टू द फिलेमोन,* संशो. (लंदन: मैकमिलन एंड कं.,1916), 166. [8]देखें रोमियों 11:25; 16:25; 1 कुरिन्थियों 2:7; 4:1; इफिसियों 1:9; 3:3–11; कुलुस्सियों 1:27; 4:3. [9]देखें यूहन्ना 22:18; 26:4; 28:14; 49:10; भजन संहिता 72:8; भजन संहिता 2:2, 3; 54:2, 3; 60:1–3; मीका 4:1, 2; मलाकी 1:11. [10]इस शब्द 1 कुरिन्थियों 2:6; 14:20; इफिसियों 4:13; इब्रानियों 5:14 में ''सिद्ध'' किया गया है। मी 5:48; रोमियों 12:2; 1 कुरिन्थियों 13:10; फिलिप्पियों 3:15; कुलुस्सियों 4:12; इब्रानियों 9:11; याकूब 1:4, 17, 25; 3:2; 1 यूहन्ना 4:18 में इसका अनुवाद ''सिद्ध'' किया गया है।